।। ओगण ग्राही के अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ ओगण ग्राही के अंग का अनुवाद ||

|| कवत ||

चलणी के मुख फूस || फूस कोळु मुख जाणो ||
चिंचड त्यागे दुध || जाय कछ माह समाणो ||
गलणी कस कूं छाड || जाण कूचो मुख राखे ||
परणी को संग छाड़ || गुंज वैस्या संग भाखे ||
निरमल जल कूं जो तजे || जेन नीर मेलो लेहे ||
सुखराम दास अग्यान नर || गुण छोड ओगण गहे || १ ||

संसार मे कितने ही मनुष्य दूसरों के अन्दर के अवगुण देखकर ले लेते है परन्तु उनके अच्छे गुणों को नही लेते है । संतो के गुण तो लेते नही है परन्तु संतो मे कोई अवगुण रहा तो उसे पकड कर रखते और अच्छे गुणों को फेंक देते है । जैसे चालनी कचरा तो अपने अन्दर रख लेती है व अच्छी सार बस्तु का त्याग कर देती है। इसी तरह कोल्हू गन्ने के छिलके को पकडकर रखता है और रसको त्याग देता है । जैसे चिंचड याने गोचीड गाय के स्तन से लगे रहते है परन्तु गाय का दूध नही गाय का रक्त पीते है । जैसे कपडे का छाननी यह बस्तु का सार रूपी रस छोड़कर,वस्तु का असार रूपी कचडा पकड़कर रखती है और कोई अपनी पाणीग्रहण की हुयी पत्नि का त्याग करके वेश्या से गोपनीय बाते करते है और इसी तरह जैन धर्मी साधू निर्मल जल का त्याग करके फेंक देने जैसा खराब पानी वे लेते है इसी तरह जो अज्ञानी पुरूष है वे साधू संतो के अवगुणों को लेते है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है ।।१।।

|| इति ओगण ग्राही का अंग सम्पूर्ण ||